कयामत का बयान (मुस्लिम शरीफ)

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

हिन्दी किताब एक हजार मुन्तखब हदीसे मुस्लिम शरीफ से रिवायत का खुलासा है.

नोट:- 'हदीष की रिवायत का खुलासा है'.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1) रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद रदी; एक यहूदी आलिम रसूलुल्लाहﷺ के पास आया और कहा- ऐ अबुल कासिम! बेशक अल्लाह तआला कयामत के दिन आसमानों को एक उंगली पर, ज़मीनों को एक उंगली पर, पहाडों और दरख्तों को एक उंगली पर, पानी वा गीली ज़मीन को एक उंगली पर और तमाम मख्लूक को एक उंगली पर उठा लेगा. फिर उनको हिलाकर फरमाएगा- में बादशाह हूं, में बादशाह हूं. आपﷺ ने उस यहूदी आलिम की बात पर ताज्जुब किया और उसकी तस्दीक करते हुए मुस्कुराए. फिर आपने ये आयत पढी सूरे जुमर/३९, आयत/६७ तरजुमा- उन्होंने अल्लाह तआला की इस

तरह कदर नहीं की जिस तरह कदर करनी चाहिए. सारी ज़मीन कयामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और तमाम आसमान उसके दाए हाथ में लिपटे हुए होंगे, और लोग जिस चीज़ को अल्लाह तआला के साथ शरीक करते है वह उससे पाक है.

2) रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदी; रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया- अल्लाह तआला कयामत के दिन आसमानों को लपेट लेगा फिर उनको दाए हाथ से पकडकर फरमाएगा- में बादशाह हूं. ज़ुल्म करने वाले और तकब्बुर करने वाले कहां है? फिर बाएं हाथ से ज़मीन को लपेट लेगा और फिर फरमाएगा में बादशाह हूं ज़ुल्म करने वाले और तकब्बुर करने वाले कहां है? फिर फरमाएगा- में अकेला ही बादशाह हूं.

3) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने मेरा हाथ पकडकर फरमाया- अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने मिट्टी को हफ्ते के दिन, उसमें पहाड इतवार के दिन, दरख्तों को पीर के दिन, मकरूहात (मुसीबतों वा तकलीफों को) मंगल के दिन, नूर को बुध के दिन पैदा किया. जुमेरात के दिन ज़मीन में चौपाये

(जानवर) फैलाये और हज़रत आदम (अलै) को जुमा के दिन मख्लूक में से सबसे आखिर में जुमा की आखिरी घडी असर और रात के दरमियान पैदा फरमाया.

4) रावी हज़रत सुहैल बिन सअद रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- कयामत के दिन लोगों को सफेद ज़मीन पर जमा किया जाएगा जो सुरखी माईल होगी जैसे मेदे की रोटी होती है, और उस ज़मीन में किसी शख्स के लिए कोई निशानी नहीं होगी.

5) रावी हज़रत आईशा रदी; मेने रसूलुल्लाहﷺ से अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के इस कौल (सूरे इब्राहीम/१४, आयत/४८) तरजुमा- उस दिन ये ज़मीन दूसरी ज़मीन में बदल जाएगी और आसमान भी बदल दिए जाएंगे के मुताल्लिक पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उस दिन लोग कहां होंगे? आपने फरमाया- "पुलसिरात" पर.

6) रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद रदी; एक मरतबा में रसूलुल्लाहﷺ के साथ एक खेत की तरफ जा रहा था,

आपने एक दरख्त के तने से टेक लगाई हुई थी, इतने में कुछ यहूदी गुज़रे, उन लोगों ने एक दूसरे से कहा- इनसे रूह के बारे में सवाल करो. उनमें से एक ने कहा- तुमको इसमें क्या शुब्हा है? कहीं वह ऐसा जवाब ना दे दें जो तुम्हें नापसन्द हो. उन्होंने कहा- इनसे सवाल करो. फिर उनमें से एक ने खडे होकर आपﷺ से रूह के मुताल्लिक सवाल किया. आपﷺ खामोश हो गए और उन्हें कोई जवाब नहीं दिया. तो मुझे मालूम हो गया कि आप पर वही नाज़िल हो रही है फिर आप पर ये वही नाज़िल हुई (सूरे बनी इसराईल/१७, आयत/८५) तरजुमा- ये लोग आप से रूह के मुताल्लिक सवाल करते है. आप फरमा दीजिए कि रूह मेरे रब का हुकम है और तुम्हें बहुत कम इलम दिया गया है.

7) रावी हज़रत अनस रदी; अबू जहल ने कहा ऐ अल्लाह! अगर ये कुरआन आपकी तरफ से हक है तो आप आसमान से हम पर पत्थर बरसाईए या कोई दर्दनाक अज़ाब भेजिये, तब ये आयत नाज़िल हुई सूरे अनफाल/८, आयत/३३-३४ तरजुमा- जब तक आप इनमें मौजूद है और जब तक ये लोग

इस्तिगफार करते रहेंगे अल्लाह इन पर अज़ाब भेजने वाले नहीं, और क्या वजह है कि अल्लाह इनको अज़ाब ना दे जबकि ये मुसलमानों को मस्जिदे हराम से रोकते है.

मतलब- रसूलुल्लाह ﷺ की मौजूदगी में कौम पर अज़ाब नहीं आया. इसलिए कि आपका पाक वजूद उनकी हिफाज़त का सबब था. उनके इस्तिगफार से मुराद ये है कि वह आईन्दा मुसलमान होकर इस्तिगफार करेंगे. मुशरीक लोग अपने आपको मस्जिदे हराम (खाना काबा) का मुतवल्ली समझते थे और जिसको चाहते तवाफ की इजाज़त देते और जिसको चाहते ना देते, चुनांचे मुसलमानों को भी वे मस्जिदे हराम में आने से रोकते थे. इस आयत में जिस अजाब का ज़िकर है उससे मुराद मकका का फतह होना है जो मुशरीकों के लिए दर्दनाक अज़ाब की हैसियत रखता है. इससे पहले की आयत में जिस अजाब की नफी है, जो पैगम्बर की मौजूदगी या इस्तिगफार करते रहने की वजह से नहीं आता, उससे मुराद वह अज़ाब है जो जड से उखेडकर पूरी तरह तबाह कर दे. सबक देने वा तंबीह के तौर पर छोटे अज़ाब का आना इसके खिलाफ नहीं है.

8) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; अबू जहल ने कहा क्या हज़रत मुहम्मद صلى الله عليه وسلم तुम्हारे सामने अपना चेहरा ज़मीन पर रखते है? उसे बताया गया- हां, तो उसने कहा- लात और उज्ज़ा की कसम अगर मेने उन्हें ऐसा करते देखा तो उनकी गरदन (अल्लाह की पनाह) रौंद डालूंगा या उनका चेहरा मिट्टी में मिलाउंगा. तो वह रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم के पास आपकी गरदन को रौंदने की नियत से आया और आप नमाज़ अदा कर रहे थे. जब वह आपके करीब होने लगा तो अचानक वापस लौट आया और अपने दोनों हाथों को किसी चीज़ से बचा रहा था. फिर उसे कहा गया तुझे क्या हुवा? तो उसने कहा- मेरे और उनके दरमियान आग की खाई थी, हौल और फरिश्तों के बाज़ थे. तो आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया- अगर वह मुझसे करीब होता तो फरिश्ते उसका एक-एक अंग नोच डालते. फिर अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने ये आयतें नाज़िल फरमाई सूरे अलक/९६, आयत/६ से १३ तरजुमा- हरगिज़ नहीं, यकीनन इन्सान सरकशी करता है क्योंकि उसने अपने आपको आज़ाद समझ लिया है. बेशक तुम्हारे परवरदिगार की तरफ ही लौटना है. क्या आपने उस अबू जहल को देखा है जो हमारे बन्दे को रोकता है जब

वह नमाज़ पढता है, भला देख तो अगर वह हिदायत पर हो या तकवा इख्तियार करने का हुकम देता है, भला देख तो, अगर अबू जहल हक को झुठलाये और पीठ फेरे दीने इस्लाम से.

9) रावी हज़रत अनस रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- कयामत के दिन काफिर से कहा जाएगा- ये बताओ अगर तुम्हारे पास पूरी ज़मीन के बराबर सोना हो तो क्या तुम उसको अज़ाब से निजात के लिए दे दोगे?, वह कहेगा जी हां, उससे कहा जाएगा- तुमसे इसके मुकाबले में दुनिया में बहुत आसान चीज़ (इस्लाम कुबूल करने) का मुतालबा किया गया था जो तुमने पूरा नहीं किया. अधिक तफसील के लिए पढिए तरजुमा वा तफसीर सूरे मायदा/५, आयत/३६-३७, और सूरे मआरिज/७०, आयत/१०-१५.